The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

गुप्तोत्तर कालीन भारत की आर्थिक व्यवस्थाः एक अवलोकन

[1]ललिता सिंह,

[2] डॉ० पवन कुमार सिंह

[1] शोधार्थी, प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड, विश्वविदयालय, बरेली

ईमेल - lavik2011ss@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17169484

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-08-2025

Published: 10-09-2025

Keywords:

अर्थव्यवस्था, आर्थिक कार्यक्रम, मानवीय, सामाजिक सम्बन्ध ।

ABSTRACT

भारत को प्राचीन काल से ही सोने की चिड़ियों कहा जाता था इसके परिपेक्ष्य में भारत की आर्थिक व्यवस्था काफी मजबूत थी क्योंकि अर्थव्यवस्था किसी देश या समाज की रीढ़ की हड्डी होती है। व्यक्ति का आर्थिक कार्यक्रम उसके मानवीय एवं सामाजिक सम्बन्ध की अभिव्यक्ति करता है। इसके द्वारा व्यक्ति अपने कार्यों एवं योजनाओं से अपनी, अपने परिवार, समाज एवं देश की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

प्रस्तावना

अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि, पशुपालन, उद्योग, शिल्प, वाणिज्य व्यापार आदि होता है। इन प्रक्रियाओं से प्राप्त उत्पादन एवं अर्जित लाभ से आर्थिक जीवन का स्वरूप निर्धारित होता है। आत्मनिर्भर आर्थिक जीवन के लिए आवश्यक है कि कृषि में पर्याप्त उन्नति से अतिरिक्त उत्पादन हो जिससे समाज का पोषण हो तथा अर्जित लाभ का समाज में समान वितरण एवं नियोजन हो। किसी भी काल के आर्थिक जीवन पर विचार करते समय उस काल की कृषि, भूमि, खाद्य, बीज, नए राज्यों का उदय होता है। हम देखते हैं कि प्राचीन काल एवं मध्यकाल के संक्रमण काल को भारत के इतिहास में पूर्व मध्यकाल कहा जाता है। यद्यपि भारत में मुस्लिम अभियानों की श्रृंखला प्रारम्भ हो चुकी थी लेकिन भारत में देखा जाए तो जलापूर्ति, राजस्व, पशुपालन, उद्योग, शिल्प, श्रमिक व्यवसाय, व्यापार इत्यादि।

प्राचीन काल में अर्थव्यवस्था को देखा जाए तो हम प्राचीन सभ्यता से शुरुआत करते हैं। सैंधव सभ्यता के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि था और वे कृषि के लिए केवल 9 प्रकार के फसलों के बारे में ही जानते थे। सैंधव सभ्यता के लोगों का सम्बन्ध वाह्य देशों से था। जिस कारण संधव सभ्यता की प्रगति का और

समृधि का कारण उसका वाह्य व्यापारिक था जो सैंधव सभ्यता के पक्ष में था। छठवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ राजनीतिक नए राज्यों का उदय होता है। हम देखते हैं कि प्राचीन काल एवं मध्यकाल के संक्रमण काल को भारत के इतिहास में पूर्व मध्यकाल कहा जाता है। यद्यपि भारत में मुस्लिम अभियानों की श्रृंखला प्रारम्भ हो चुकी थी लेकिन भारत में देखा जाए तो प्राचीन व्यवस्थाओं का इस्लामीकरण अभी हुआ नहीं था। गुप्तों के पतन के बाद उत्तर राज्यों में कन्नौज राजनीतिक शक्ति का प्रमुख केन्द्र बन गया था। इसी के साथ-साथ जाति व्यवस्था अत्यधिक जटिल हो गई और समाज में जो था वह रूढ़िवादी हो गया। वस्तु विनिमय के लिए उस काल में सिक्कों का प्रयोग शुरू हुआ। पूर्व मध्यकाल को राजपूत काल के नाम से भी जाना जाता है। इसमें कई राजवंशों का जन्म हुआ था. इन्हीं राजाओं के आपसी मतभेद के कारण ये एक-दूसरे राजवंशों को आक्रमण कर उनके राज्य को अपने राज्य में मिलाकर अपने राज्यों का विस्तार करते थे। इससे व्यापार पर काफी प्रभाव पड़ा जिनके कारण इनके आर्थिक जीवन को चलाने के लिए इनमें कई प्रकार से बदलाव को देखा जा सकता है और साथ ही साथ यह भारत की अर्थव्यवस्था को भी ध्वस्त करते दिखाई पड़ते है। वैसे अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि था। कृषि संगठन और अर्थव्यवस्था बहुत जटिल थी। यहाँ भूमिपति, सामन्तों का कृषक क्षेत्र में वर्चस्व हुआ। जबरन मजदूरी और कृषि दास प्रथा स्थापित हुई। इनका आर्थिक जीवन कृषि, पशुपालन, सिंचाई, उद्योग, व्यवसाय, वस्तु विनिमय, मुद्रा प्रणाली, माप तौत्र एवं व्यापारिक व्यापार चाहे वह आन्तरिक हो या ब्राह्य व्यापार ये इन सभी पर निर्भर थे। कृषि के साथ व्यापार व्यवसाय की स्थिति सन्तोषजनक थी लेकिन सामन्ती तत्वों के उदय ने व्यापार को नुकसान पहुँचाया। व्यापार प्रायः दो तरह से किया जाता था स्थल मार्ग और जल मार्ग। शासक लोग ग्रामीण समाज से जुड़ गए और आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र में कृषि भूमि पर अधिक जोर दिया गया जिससे नगरों की संख्या एवं व्यापार में गिरावट देखने को मिली। इस स्थिति के कारण उत्तरी भारत में श्रेणियों एवं संघों को धक्का लगा। उद्योग को चलाने के लिए इस काल में सिक्कों का प्रचलन शुरू हुआ। कई गुप्तोत्तर काल के राजाओं दवारा कई तरह के सिक्के चलाये गये, जैसेः दम्म, गधिया आदि के नाम से प्रसिदध थे। ये सोने, चाँदी व ताँबे के सिक्के वस्तु विनिमय या क्रय-विक्रय के लिए प्रयोग किए जाते थे।

कृषि व्यवस्था

गुप्तोत्तर काल में कृषि संगठन तथा कृषि अर्थव्यवस्था काफी ज्वलनशील मुददा था। इस काल में देखा गया कि कृषि का विकास और भूमि सम्बन्धों का संगठन भूमि अनुदान के माध्यम से हुआ था। इस अनुदान प्रक्रिया की शुरुआत प्रथम शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक व्यवहारिक रूप से यह पूरे उपमहाद्वीप में फैल गई थी। कृषि से सम्बन्धित समसामयिक लेखों में 100 से ज्यादा अनाज जिसमें गेहूँ, दानें इत्यादि का विवरण भी मिलता है।

शून्य पुराण के दद्वारा बंगाल में लगभग 50 से अधिक फिल्म के धान उगाया जाता है। अमरकोष में अन्न से सम्बन्धित बहुत सी किस्मों में जैसे कि चावल गेहूँ तथा मसूर, फलियों वाले अनाज, सब्जियों और फलों के नामों का उल्लेख मिलता है। इस काल में कृषि से अजीविका कमाने की अनुमति सभी को दी गई थी लेकिन ह्वनसाँग, खुर्दादव और अलइद्रिसी के दद्वारा पता चलता है कि खेती करना शूद्रों का ही व्यवसाय था। इनकी तुलना हम यूरोप के कृषिदासों से की गई है।

सामन्तीय भू-व्यवस्था

याज्ञवल्क्य एवं बृहस्पति स्मृति ग्रन्थों के लेखकों दद्वारा भूमि के एक ही टुकड़े पर 4 क्रम में भूमि अधिकारों का उल्लेख किया है। इनके अनुसार उपभोग करने वालों के विभिन्न कम निम्न प्रकार थेः महीपति (राजा), क्षेत्रस्वामी (खेत का मात्रिक), कृषक (खेती करने वाला) और अर्थकृषक। भूमि अनुदानों में भूमि पर वर्गीय अधिकारों तथा अर्थकाश्तकारी का मार्ग प्रशस्त किया और इस परम्परा के कारण ही जमींदारों की उत्पत्ति हुई। जो किसानों के दवारा पैदा किया गया अनाज या उत्पादन के आधार पर जीवन व्यतीत करते थे। इस प्रक्रिया की गति आठवीं सदी से और तीव्र हो गई और इसने किसानों के एक ऐसे वर्ग को जन्म दिया जो जमींदारों के अत्यधिक करों के बोझ से दब गए तथा भूमि में उच्चतर अधिकारों से देय जमींदार वर्ग के लिए जीविकापार्जन करने वाले बन गए।

सिक्कों की कमी

कुषाणों एवं गुप्तकाल में सोने के सिक्कों की बहुतायत थी। अतः छठवी शताब्दी के बाद जारी बन्द हो गए। परन्तु देश के अन्य भागों की तुलना में पंजाब तथा उत्तर पश्चिमी भागों में 1000 ई० तक के प्रचुर मात्रा में सिक्के प्राप्त हुए है। इसके अतिरिक्त इस काल के कश्मीर से भी काफी मात्रा में सिक्के मिलते है। इस समय काल में कृषि का व्यापक स्तर पर प्रसार हुआ केवल इसकी पुष्टि के लिए काफी मात्रा में धातु, मुद्रा, धन की आवश्यकता होगी। दूसरे सिक्के सत्ता की भी अभिव्यक्ति थे। जब गम्भीर मजबूरियों न हो तब तक कोई भी शासक सिक्कों के नाम से जारी करने के विशेष अधिकार से स्वयं को वंचित नहीं करेगा।

व्यापार के ह्रास के कारण

अधिकारियों को नकद धन का भुगतान करने के स्थान पर भूमि अनुदान दवारा सिक्कों की भूमिका को खत्म कर दिया गया था। लेन-देन की प्रक्रिया में मुद्रा का स्थान वस्तु विनिमय एवं कौड़ियों ने ले लिया था।

गुप्तोत्तर काल में व्यापार

भारत मै गुप्तोत्तर काल में मध्य भारत, उत्तर भारत जैसेः राजस्थान, मालवा, गुजरात में जो हम सिक्कों के द्वारा चलन देखा गया था। गुप्तोत्तर कालीन समाज में व्यापार प्रायः 2 मार्गो द्वारा किए जाते थे एक स्थल मार्ग और समुद्री मार्ग। इसमें स्थल मार्गों में आन्तरिक व्यापार में दैनिक उपभोग की वस्तुओं जैसे नमक, मसाले, कपड़ा इत्यादि का एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की आवश्यकता पड़ती थी और ब्राह्य देशों से भारत का सम्बन्ध अच्छा रहा था, जिसके कारण भारत का ब्राह्य व्यापार चीन, रोम, अरब से आयात निर्यात के लिए काफी फला फूला था। उदाहरण के रूप में सागौन, चन्दन की लकड़ी, नील, मेहन्दी, गोंद, कीमती पत्थर और समुद्री मोती भी दक्षिण भारत से विदेशों में भेजा जाता था।

वस्तु विनिमय

मानव सभ्यता का विकास निरन्तरता का परिणाम था। एक व्यक्ति के पास एक वस्तु होती थी तो वह दूसरी वस्तु से उसका आदान-प्रदान का 4/5 करता था। वस्तुओं का आदान-प्रदान योविनिमय ही क्रय-विक्रय का आदितम स्वरूप था।

उपसंहार

गुप्तोत्तर काल की शुरूआत से लेकर इनकी अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, पशुपालन, व्यवसाय और उद्योग के रूप में रहा था। सिक्कों की कमी तथा नगरों का पतन भी होने लगा था। सिक्कों की कमी के कारण कौडियों का प्रचलन बढ़ गया था। व्यापार वाणिज्य और उद्योग धन्धों में गिरावट से व्यापारियों, शिल्पी, श्रेणियों तथा संघों की स्थिति भी कमजोर कर दी थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यादव जितेन्द्रः प्राचीन भारत में व्यापार, (300-600 ई०)।

2. श्री माली, कृष्ण मोहनः झा, दविजेन्द्र नारायणः प्राचीन भारत का इतिहास।

3. सिंह, राघवेन्द्र प्रतापः पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत का सामाजिक इतिहास।

4. अहमद इमत्याजः मध्यकालीन भारत, 8-10वीं शताब्दी।

5. शर्मा, रामशरणः प्रारम्भिक भारत का परिचय, प्राचीन से मध्यकाल की ओर।

6. उपाध्याय, वासुदेवः प्राचीन भारतीय मुद्राएं।

7. सिंह, मिनाक्षीः गुप्त युगः एक मुद्रा शास्त्रीय अध्ययन।

8. श्याम मनोहर मिश्रः प्राचीन भारत में आर्थिक जीवन।

9. शर्मा, घनश्याम दत्तः मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संरचनाएं, जयपुर, पृ०सं० 1992

10. पाण्डेय, अवध बिहारीः पूर्व मध्यकालीन भारत, इलाहाबाद, 1972।

11. चोपड़ा, पी०एन०० भारत का सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति।

12. गुप्ता, डॉ० दीपाः प्राचीन भारत में आर्थिक संस्थानों का विकास।

13. इलियट, सर एम० एण्ड डाउसन प्रो० जॉनः द हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एज टोल्ड वाई इट्स ऑन हिस्टोरियन, इन वाल्यूम 8, लन्दन, 1866-771

14. ओझा, आदित्य प्रसादः प्राचीन भारत में सामाजिक 1922 स्तरीकरण, इलाहाबाद,

15. आचार्य दीपंकरः कौटिल्य कालीन भारत, 1968

16. चट्टोपध्याय, भास्करः द ऐज ऑफ द कुषाणः ए न्यूमिसमेटिक स्टडी, 1967।